गांधी-मार्ग

जनवरी-फरवरी 2026

- महात्मा गांधी
- अशोक वाजपेयी
- चंचल
- सुशोभित
- हरिभूषण सिंह
- रामशरण जोशी

नया साल !

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक
वर्ष 68, अंक 1, जनवरी-फरवरी 2026

गांधी शांति प्रतिष्ठान

1. **आओ हे नववर्ष!**		3
2. **शुरू में...**		4
3. **काव्य :** गांधी : दो कविताएं	आयुष द्विवेदी	11
4. **हम :** राजघाट मत जाना...	सुशोभित	14
5. **पर्दे पर गांधी :** इतिहास बनाने वाले...	हरिभूषण सिंह	18
6. **दस्तावेज :** "मैं अंग्रेजों को भारत में...	महात्मा गांधी	22
7. **सरहदी गांधी :** 20 जनवरी	चंचल	25
8. **सूरते-हाल :** "ऐसे दस्तूर को मैं नहीं मानता...	रामशरण जोशी	28
9. **काला सच :** "नगरों में धूर्तों की टोलियां...		31
10. **आईना :** मैं पूछता हूं...	अशोक वाजपेयी	38
11. **कविता :** घर	विनोद कुमर शुक्ल	48
12. **यादें**		49
13. **जेल से :** मैं जेल में भी आजाद हूं...	उमर ख़ालिद	55
14. **टिप्पणियां**		58
15. **पत्र**		62
16. **शुभप्रभात**		64

आवरण : कैलेंडर बदलने से साल नया होता तो कब का हो गया होता; इस कनैडियन कलाकार की तरह तैल रंगों से फूलों को आंकने से फुलवारियां गमकतीं तो सारा संसार ही बगीचा बन जाता. लेकिन नया तो तभी साकार होता है जब मन नया हो, आंखें नयी हों. उम्मीद वह ठोस शक्ति है जो हर प्रतिकूलता और हर अंधकार को पार कर संभावनाओं के नये सूरज को छू लेती है. पाकिस्तान का यह अनजान शायर उम्मीद को ही रोशनी मान कर अंधकार को पार करना चाहता है. हम भी संसार में छाए अंधकार व अंधधुंधी को नये साल में उम्मीद की रोशनी से दीपित करें. अंक-सज्जा की है **मुकेश गेरा** ने.

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क. दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें. अपना शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के नाम भेजें. ऑनलाइन भुगतान के लिए केनरा बैंक खाता नं. 0158101030392 IFSC CODE : CNRB 0000158.

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित
फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, **Email:** gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नियर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

आओ हे नववर्ष!

संकीर्ण और ओछी राजनीतिक होड़ ने मन का आसमान धुंधला कर दिया है. कभी ऐसा था हमारा मानसिक क्षितिज जो गाता थाः

अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानाम तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

(महोपनिषद, अध्याय 6, मंत्र 71)

''यह अपना मित्र है और यह नहीं है, ऐसी गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं. उदार हृदय वालों के लिए तो संपूर्ण धरती ही परिवार है''

यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश-कक्ष पर भी अंकित रहा है—पता नहीं, संसद का नया भवन भी अब यही बोलता है या नहीं!

आचार्य रवींद्रनाथ ठाकुर से एक बार प्रख्यात अभिनेता बलराज साहनी ने, जो तब गुरुदेव के शांतिनिकेतन में ही अध्यापक थे, कहा कि जिस प्रकार आपने भारत का राष्ट्रगान लिखा है, क्या उसी प्रकार आपको संपूर्ण विश्व के लिए भी एक विश्वगान नहीं लिखना चाहिए?

गुरुदेव स्मित भाव से बोलेः ''वह तो कब का लिखा जा चुका है!'' फिर गुरुदेव ने बलराज साहनी को महोपनिषद का यही मंत्र गा कर सुनाया. उन्होंने बांग्ला में इसका अनुवाद भी किया.

गुरु नानक 1506 या 1508 में पुरी के जगन्नाथ मंदिर की यात्रा पर थे. वहां उन्होंने इसी मंत्र का उच्चारण किया था. गुरु नानक ने अपनी आरती में परमात्मा के विराट स्वरूप का चित्रण भी किया और कल्पना की कि समस्त ब्रह्मांड उसकी ही पूजा में लीन है.

गुरु नानक की आरती के आरंभिक बोल हैंः

गगन में थालु, रवि चंदु दीपक बने
तारका मंडल जनक मोती.
धूपु मलआनलो, पवण चवरो करे
सगल बनराइ पफुलन्त जोति।।
कैसी आरती होइ।।
भवखंडना तेरी आरती।।
अनहद सबद बाजत भेरी।।

शुरू में...

संयुक्त राष्ट्रसंघ की जेनरल असेंबली हमेशा ही बैठती है और दुनिया भर के राजनेता अपनी कुर्सी के दम पर वहां से संसार को संबोधित करते हैं. यह चलन है और चला आ रहा है. अधिकांशतः तो यही होता है कि वहां से राजनेता वह सब कहते हैं जिसे वे न तो मानते हैं, न वैसा करते हैं. जितनी बड़ी महाशक्ति, उतना खोखला उसका संबोधन! जब शीतयुद्ध का दौर था तब इसी जेनरल असेंबली ने रूसी राजनेता निकीता ख्रुश्चेव को जूते लहराते और प्रायः हर अमरीकी राष्ट्रपति को दुनिया को धमकाते व अपना गुणगान करते सुना है. लेकिन कभी-कभी ऐसा भी हुआ है कि यहां से किसी का कहा वक्त के पन्ने पर ठहर गया है, और फिर विश्व चेतना में थरथराता रहा है.

ऐसा ही हुआ था 11 दिसंबर 1964 को! संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में बमुश्किल कुछ मिनटों का संबोधन था वह – संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में दिया गया अब तक का सबसे छोटा संबोधन! आज की तरह ही तब भी दुनिया का मौसम ऐसा ही था—लातिन अमरीका के सारे छोटे देशों को दादा अमरीका ने अंगूठों तले दबा रखा था और कभी इसे, तो कभी उसे निगलने की धमकियां उछाल रहा था. तानाशाही के चंगुल से अभी-अभी छूटा और साम्यवादी दर्शन के साम्य को सामने रखकर चलने की कोशिश में लगा फिडल कास्ट्रो-चे गुवेएरा का स्वाभिमानी क्यूबा उसे खटक रहा था. जैसे उसे आज ग्रीनलैंड को उदरस्थ करना अपनी सुरक्षा के लिए जरूरी लग रहा है, वैसा ही तब क्यूबा को उदरस्थ करना भी जरूरी लग रहा था. दबाव इतना तीखा व अमर्यादित था कि क्यूबा की चेतना का दम घुटा जा रहा था. ऐसे माहौल व ऐसी मनःस्थिति में क्यूबा की अंतरात्मा की आवाज बनकर संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा को संबोधित करने पहुंचे थे क्यूबा की क्रांति के नायक चे गुवेएरा - पहली व अंतिम बार! जब उन्हें संबोधन के लिए बुलाया गया तो सारी महासभा को जैसे लकवा मार गया - क्या बोलेगा क्यूबा का चे? अपनी जगह से उठकर, प्रतिनिधियों की कतारें पार कर व्याख्यान के पोडियम तक पहुंचते चे के कदमों में बला की स्थिरता व गजब का आत्मविश्वास था. उन्होंने अपने हाथ के कागजात पोडियम पर रखे और मजबूत, अकंपित स्वर में बोलेः ''लातिन अमरीकी देशों के बारे में अपना जो इरादा अमरीका ने जाहिर किया है उसके जवाब में हमारी जनता की एक ही चीखती

हुई आवाज रोज-रोज उठ रही है कि हम आक्रांता का खूनी पंजा मरोड़ कर, उसे बेकाम कर देंगे! इस संकल्प को पूरा करने में फिर चाहे हमें अपनी मातृभूमि मिले या अपनी मौत!'' बस!! ... चे ने अपने कागजात समेटे और जैसे आए थे वैसे ही लौट गए - लेकिन एक बड़े फर्क के साथ - लौटते हुए उठते उनके हर कदम के साथ महासभा की तालियां गूंज रही थीं. चे ने उस रोज अपनी आजादी या मौत का जो समीकरण महासभा के सामने रखा था, इतिहास की आवाज सुनने वालों को उसमें गांधी की प्रतिध्वनि सुनाई देगी : ''करो या मरो!''

आज वेनेजुएला को डकार लेने के बाद, ग्रीनलैंड को निगल जाने की बेशर्म धमकी डोनल्ड ट्रंप उछाल रहे हैं और सारा संसार उसे सुन-देख रहा है, कह कुछ खास नहीं रहा है. नाटो देशों – फ्रांस, जर्मनी, इटली, पोलैंड, स्पेन – में खलबली है जरूर लेकिन वह वेनेजुएला या ग्रीनलैंड के बारे में कम, अपने बारे में अधिक है. नाटो संधि का अस्तित्व सदा से ही अमरीका की मुट्ठी में रहा है, और सारे नाटो देश अमरीका की जी-हुजूरी करते आए हैं. राष्ट्रपति ट्रंप को जी-हुजूर ही चाहिए – एक-दो नहीं, जी-हुजूरों की पूरी फौज चाहिए लेकिन नाटो नहीं चाहिए, क्योंकि बकौल ट्रंपः ये निकम्मे देश अपना सारा बोझ अमरीका पर डालते हैं! आज वे ही 'निकम्मे देश' अमरीका की जबर्दस्ती का मुकाबला करने के लिए अपनी फौजें ग्रीनलैंड भेजने की बात कह रहे हैं. लेकिन अमरीका जानता है कि ये सब उसके पिछलग्गू एक-दूसरे के कंधों पर खड़े होकर भी उसकी बराबरी नहीं कर सकते, फौजी मुकाबला तो क्या खाक करेंगे!

किसी सड़कछाप शोहदे के तेवर में दुनिया को हांकने का पूरा स्वाद हिटलर तो नहीं चख सका. उसे पहले ही आत्महत्या कर लेनी पड़ी. लेकिन बाद में यह कितनों ने पहचाना कि हिटलर-विरोधी मित्र राष्ट्रों के गठबंधन के भीतर से कितने ही बड़े-छोटे हिटलर पैदा हो गए और वे सभी दूसरे का हित हड़पने-दबाने में लग गए?

इस कहानी का एक धागा इतिहास की किताब में 78 साल पहले उलझा हुआ मिलता है. वह 27 जनवरी 1948 की सुबह थी. सांप्रदायिक हिंसा की अकल्पनीय आग में झुलसते, अपने खास साथियों के बदले तेवर से आहत, एकदम अकेले पड़ गए महात्मा गांधी बाजी पलटने की अपनी आखिरी कोशिश का नक्शा बनाने में लगे थे कि उस रोज सुप्रसिद्ध अमरीकी पत्रकार विन्सेंट शीन मुलाकात के लिए पहुंचे. गांधी के लिए शीन केवल पत्रकार होते तो उन्हें आज मिलने का वक्त न मिला होता, क्योंकि गांधी हर तरह की मुलाकात से तब इंकार कर रहे थे. शीन गांधी के आत्मीय अध्येता भी थे, सो गांधी ने उन्हें बुला लिया था. लेकिन आज शीन गहरी उलझन में थे. उनका व्यथित मन कुछ सोच-समझ